नेहरूवादी व वामपंथी लेखकों की पाठ्य पुस्तकें और सिख गुरुओं का बलिदान

- जगजीवन जोत सिंह आनन्द

.. और फिर अंग्रेजों के भारतीय उत्तराधिकारी अंग्रेजी नीतियों पर चल पड़े। सत्ता प्राप्ति जीवन का परम लक्ष्य हो चला था। ऐसे में एक पुस्तक ''डिस्कवरी ऑफ इण्डिया'' प्रकाशित हुई। लेखक थे-भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू। इतिहास की इस पुस्तक में भारत का वास्तविक इतिहास, भारतीय संस्कृति के स्वर्णिम पृष्ठ दूरबीन से देखने पर भी नजर नहीं आते थे। सतर्कता से अवलोकन करने पर नजर आता है-

वृहद स्वरूप का संगठित... नेहरूवादी षडयंत्र !

सोचा था कि पूर्वजों से प्रेम प्राकृतिक हैं। नेहरू साहिब अपने पूर्वजों के रक्षार्थ बलिदान देने वाले नवम् गुरु तेगबहादुर जी के प्रति श्रद्धा तो रखते होगें। वे उन्हें तो पुस्तक में विशिष्ट स्थान देंगे। उनके जीवन और कृतत्व के संग न्याय होगा। लेकिन यह क्या? पठन को मिली-विसंगतियां। अपने बहुविचारी भारतीय समाज के संरक्षण के निमित एकविचारी जेहाद से टक्कर लेने वाले गुरु साहिब के इतिहास का उल्लेख तक नहीं था।

जब पंजाब के लोग 1947 के विभाजन की त्रासदी के बाद अपने को पुन: स्थापित करने में जुटे थे। तब नेहरूवादी एवम् कम्यूनिस्ट विचारक भारतीय तंत्र में घुसकर भारत को सांस्कृतिक, सामाजिक धरातल पर खोखला करने में जुटे थे। इसी क्रम में शिशु एवम् तरुण छात्रों की पाठ्य पुस्तकों में भारतीय संस्कृति पर कुठाराघात कर दिग्भ्रमित करने की योजना पर अमल लाना प्रारम्भ हुआ। यह एक संगठित प्रयास था।

सामाजिक विज्ञान भाग-1, ''मध्यकालीन भारत'' कक्षा 7 की लेखिका रोमिला थापर लिखती है-'सातवें गुरु की मृत्यु के पश्चात् औरंगजेब ने गुरुओं के उत्तराधिकार के झगड़े से फायदा उठाने का प्रयत्न किया। इस बीच सिक्खों की शक्ति लगातार बढ़ रही थी। इस बढ़ती हुई शक्ति को रोकने के लिए मुगल प्रशासन ने 1675 में श्री गुरु तेगबहादुर को फांसी का हुक्म दिया।'

मैडम रोमिला थापर जी ने बड़ी चतुराई से औरंगजेब द्वारा दिये गये हुक्म के स्थान पर 'मुगल प्रशासन' का हुक्म लिखा है। औरंगजेब के शब्दों को आवरण में छुपाने के पीछे मैडम की क्या मजबूरी रही होगी?

धर्मनिरपेक्षता ? जी नहीं। औरंगजेब की एक विचारी जहादी मानसिकता और एक बहुविचारी एवम् वैज्ञानिकता वाले श्रेष्ठ समाज को बचाने के संघर्ष करने वाले गुरुजी। नेहरूवादियों की परिभाषा में तथाकथित सेक्युलर कौन? प. कृपाराम जी, कश्मीर का ब्राह्मण समाज (जिसके नेहरू साहिब हिस्सा थे), जबरन धर्मान्तरण जैसे विषयों को छुपाने के पीछे नेहरूवादी विचारकों की मंशा क्या है? यानि मज़हब के हित के लिये बोला गया झूठ फरिश्तों की वाणी। .... और सौ बार बोला गया झूठ अन्तत: सच हो जाता है। नेहरू साहब, सुनें-भारत के ऐतिहासिक धरातल का सत्य है, कश्मीरी ब्राह्मणों के जबरन धर्मान्तरण के विरोध में गुरु तेगबहादुर जी ने बलिदान दिया था।

''मध्यकालीन भारत'', लेखक प्रो. सतीश चन्द्र (कक्षा ग्यारह) के पृष्ठ 328 पर लिखा है-'..........औरंगजेब गुरु से इसलिए नाराज था कि उसने कुछ मुसलमानों को सिख बना लिया था। एक परम्परा यह भी है कि गुरु ने कश्मीर के स्थानीय गवर्नर के खिलाफ जो वहां के हिन्दुओं पर धार्मिक अत्याचार कर रहा था, आवाज उठाई थी। किन्तु हिन्दुओं के साथ धार्मिक अत्याचार का उल्लेख कश्मीर के किसी इतिहास में नहीं मिलता है।''

मैडम रोमिला थापर और जैनटिल मैन प्रो. सतीश चन्द्र के उल्लेखों में अन्तर स्पष्टता दिखता है। एक नेहरूवादी, एक कम्यूनिस्ट। विचारधारा के चश्में से ऐसा ही इतिहास लेखन हो सकता है। रही बात साक्ष्यों की, तो इस त्रासदी को स्वयं झेलने वाले सर्वंशदानी दशम् गुरु गोबिन्द सिंह जी का स्वलिखित प्रपत्र'' जफरनामह'' प्रोफेसर साहिब की नज़र में क्यों नहीं आया? अन्य साक्ष्य इस प्रकार हैं-

1. भाई नन्द लाल सिंह जी फारसी भाषा में रचित पुस्तक ''जिन्दगी नामह''

2. भाई अल्लाह यार खान द्वारा अरबी लिपि में लिखी एवम् पंजाबी भाषा अन्तर्गत आने वाली काव्य रचना में पूर्ण विवरण है,

कम्युनिस्ट इतिहासकारों की समस्या यह है कि वे इतिहास के लिये इतिहास नहीं लिखते, अपितु लाल क्रान्ति

के लिए इतिहास लिखते है।

सर्वविदित है कि दशम् गुरु गोबिन्द सिंह जी के दोनों छोटे साहिबजादों को सरहन्द के नवाब ने दीवार में जिन्दा चुनवा दिया था। परन्तु ''मध्यकालीन भारत'' में लेखक प्रो. सतीश चन्द्र पृष्ठ 330 लिखते हैं कि-

''गुरु के दो बेटों को बन्दी बना लिया और जब उन्होंने इस्लाम कबूल करने से इनकार कर दिया, तो सरहन्द में उनके सिर धड़ से अलग कर दिए गये।

... यह बात संदिग्ध है कि गुरु के दो बेटों के साथ यह नृशंस व्यवहार वजीर खां ने औरंगजेब के कहने पर किया था।....''

प्रोफेसर सतीश चन्द्र ने मामले के संदिग्ध होने का कारण तक बताना उचित नहीं समझा। नेहरूवादी और कम्युनिस्ट लेखक 'औरंगजेब बचाओं' आन्दोलन में कूद पड़े है-ऐसा लगता है।

''आधुनिक भारत'' लेखक-विपिन चन्द्र (कक्षा 12) पृष्ठ 19 पर लिखते हैं-

'बंदा ने पंजाब के किसानों और नीची जातियों के लोगों को एकजुट किया और मुगल फौज के खिलाफ आठ साल तक जोश-खरोश के साथ गैरबराबरी की लड़ाई चलाई। उसे 1715 में पकड़ लिया गया और कत्ल कर दिया।...'

उपरोक्त वाक्य में 'नीची जातियों' शब्द का प्रयोग ही असंवैधानिक है। यह अपराध माना गया है। जबकि मिस्टर विपिन चन्द्र इस शब्द को तरुण छात्रों को परोस रहे है। साथ ही, विपिन चन्द्र साहब गैर बराबरी के द्वन्द्व को गलत मानते हैं। जबकि वीर की परिभाषा ही है कि जो विपरीत परिस्थितियों में जूझे और अपने मत पर दृढ़ रहे। पता नहीं क्यों नेहरूवादियों और कम्यूनिस्टों को दृढ़ निश्चयी लोग पसन्द नहीं। इसी बन्दा सिंह बहादुर के सम्मान में रविन्द्रनाथ टैगोर जी ने कविता की रचना की थी।

इसी पुस्तक के पृष्ठ संख्या 20 पर विपिनचन्द्र जी महाराज रणजीत सिंह के बारे में लिखते है......... धर्मपरायण सिख होते हुए भी यह कहा जाता हे कि 'अपने सिंहासन से उतरकर मुसलमान फकीरों के पैरों की धूल अपनी लंबी दाढ़ी से झाड़ता था।'

सिख जीवन पद्यति (रहत मर्यादा) में ऋषियों के वेश रूप के अंश, केशों को धारण करने, संवारने की विशेष रीति है। उपरोक्त बातें विपिन चन्द्र जी ने सिखों को उद्वेलित करने व दिल्ली तख्त पर बैठ अपने आकाओं को खुश करने के लिये लिखी है।

सामाजिक विज्ञान-1 ''मध्यकालीन भारत'' कक्षा 7 की लेखिका रोमिला थापर ने श्री गुरु नानक साहिब जी के वैश्विक प्रेम के सिद्धान्त पर एक शब्द भी लिखना ठीक नहीं समझा। मैडम जी ने 'नानक' शीर्षक के अन्तर्गत चार वाक्य लिखकर इतिश्री कर दी है। यहां तक कि 'गुरु' शब्द लिखने से भी गुरेज किया गया है। इसी पुस्तक में मुगल सम्राट जहांगीर के हाथों सिखों के पंचम् गुरु अर्जुनदेव जी के हुए बलिदान का जिक्र तक नहीं है। इसके बाद सीधे दसवें गुरु का उल्लेख है। पूरा नाम गुरु गोबिन्द सिंह लिखने से रोमिला थापर जी योजनाओं में बाधा आती। अत: व्यापक राजनैतिक स्वांग को दृष्टि में रखते हुए, इतिहास की रचना हुई है।

गुरु रूप साध संगत, इस नये धर्म युद्ध में संगठित होना है। गुरु इतिहास को विकृत करने वाले राष्ट्रधातियों को चिन्हित करना है। उनके षडयंत्रों का सतत अवलोकन करना है। गुरु कृपा करे, इन राष्ट्रविरोधियों को धूल धूसरित करने प्रत्येक सिख की ही नहीं, अपितु प्रत्येक भारतीय की हिस्सेदारी होगी।

1947 के बाद जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में भारतीय कांग्रेस ने पहला काम किया, वह था-'गांधीवाद की हत्या'। गांधीवादी विचारधारा कांग्रेस का मूल चारित्रिक चेहरा थी। गांधीवाद के मूल में था -राष्ट्रनायक श्री राम का चिन्तन, श्री मद्‌भागवत गीता का विचार, स्वदेशी का जीवन दर्शन। नेहरू अस्थिर मन के राजनेता थे। ज्यादातर अंग्रेजों सा जीवन जीना, कभी खादी पहन गांधीवादी सा हो जाना। वे तय नहीं कर पाये, लेनिन के नेतृत्व में आई रूस की वाल्शिविक क्रांति पर अपना नजरिया। वे कभी रोम के पोप की दुनिया की अप्रासांगिक परिभाषिक शब्दावली 'चर्च' 'स्टेट' 'सेक्यूलरिज्म' का प्रयोग करते नजर आते हैं। तो कभी इम्पीरियल कॉफी हाऊस में काले इंग्लिश मैन बन कॉफी पीते नजर आते हैं। धर्म, सम्प्रदाय, मजहब के आधार पर दो पृथक पर्सनल लॉ बनाने वाले नेहरू स्वयं

को धर्म निरपेक्ष (उन्हीं की परिभाषा में) भी नहीं कह पाते है। विश्व के राजनैतिक पटल पर यू.एस.एस.आर. (सोवियत) महाशक्ति के रूप में सामने आ रहा था। कम्युनिस्ट तब तक भारत में कमजोर थे। विभाजन पूर्व की अपनी अंग्रेज परस्त कारगुजारियों के चलते कम्यूनिस्ट बदनाम थे। दिग्भ्रमित नेता के रूप में नेहरू का किरदार सोवियत सरकार को भा गया। इससे देसी कम्यूनिस्टों ने भी ऊर्जा प्राप्त करनी थी। यही भारतीय इतिहास का वह कालखण्ड है, जब कम्यूनिस्टों ने राजसत्ता के गलियारों में, अफसरशाही में, राजकीय संस्थानों में घुसपैठ की।

कम्यूनिस्टों के लिए भारतीय धरातल के सत्य से कोई सरोकार नहीं था। उनका राजनैतिक दर्शन भारतीय मानस के अनुकूल नहीं था। 'सरबत दा भला' मांगने वालों की दुनिया में कृत्रिम संघर्ष को गढ़ने के अवसर बहुत कम थे। ऐसे में नेहरूवादी-कम्यूनिस्ट भाई-भाई। नेहरूवादी व वामपंथी लेखकों की जमात ने आस्था के केन्द्रों और फलसफों पर कुठाराघात करना प्रारम्भ किया। एक सोची समझी राजनीति के तहत भारतीय इतिहास को गलत तरह से लिखा गया। दूषित इतिहास तरूण छात्रों को पाठ्य पुस्तकों के माध्यम से परोसा गया।

पुस्तक 'आधुनिक भारत' सामाजिक विज्ञान भाग-1 कक्षा आठवीं-लेखक अर्जुन देव, इंदिरा अर्जुन देव ने पृष्ठ 13 पर लिखा है-"हमारा राष्ट्रीय आन्दोलन रूसी, क्रान्ति के असर से अछूता नहीं रहा। मार्क्स एवं एंगेल्स के विचारों ने दुनिया के सभी देशों को प्रभावित किया है।" इस पुस्तक में लेनिन का पूरे पृष्ठ का चित्र दिया है। और किसी महापुरुष का ऐसा चित्र नहीं दिया गया।

मुगल काल और अंग्रेजी राज्य के दिनों में स्वतंत्रता संघर्ष में सिखों की भूमिका अति महत्वपूर्ण है। वैश्विक बंधुत्व वाला स्वतंत्रता प्रिय मत है-सिख जीवन दर्शन। यह शान्ति, विनम्रता, त्याग, देशभक्ति का संदेश देने वाला मत है। इसीलिए सभी भारतीय जन, चाहे वे किसी पंथ, जाति, भाषा वाले हो, वे गुरु साहिबान के बलिदानों व उपदेशों से प्रेरित होते हैं। इसी कारण से वाजपेयी सरकार ने, पूर्व में, एन.सी.ई.आर.टी. पाठ्य पुस्तक "मेडीवियल इण्डिया" (लेखक वामपंथी सतीश चंद्र) कक्षा ग्यारह के पृष्ठ 237-238 को हटा दिया था। जिसमें गुरु तेगबहादुर जी को 'लुटेरा' कहा गया था और इसे फांसी का प्रमुख कारण भी बताया गया था। जबकि गुरु तेगबहादुर जी का शीश तलवार से अलग करने की घटना से सम्पूर्ण समाज परिचित है।

इसके इत्तर सप्रग सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्री श्री अर्जुन सिंह ने तय कर लिया है कि वह देश की भावी पीढ़ियों के मन में भारतीय जीवन मूल्यों, नैतिकता, आध्यात्मिकता, संस्कृति और देश के गौरवशाली महापुरुषों तथा संस्कृति के पुरोधाओं के प्रति वितृष्णा का भाव भरकर ही रहेंगे।

दूसरी ओर, कर्नाटक राज्य की हिन्दी की पाठ्य पुस्तक (कक्षा 9) के शीर्षक 'भारतीय नारी' में भारतीय नेत्रियों के संदर्भ में लिखा है-"सोनिया गांधी 'राजीव गांधी प्रतिष्ठान' द्वारा राष्ट्र की भावैक्य की दिशा में कार्य कर रही है।"

'आधुनिक भारत'- लेखक विपिन चन्द्र (कक्षा 12) में लिखते हैं कि औरंगजेब की मृत्यु के बाद के मुगल सम्राट बहादुरशाह से गुरु गोबिन्द सिंह जी ने 'मन्सबदारी' कबूल कर ली थी। विपिन चन्द्र ने इसके लिये एक हास्यास्पद साक्ष्य प्रस्तुत भी किया है। आज के वैज्ञानिक युग में वामपंथी पुरातनपंथी पूर्वाग्रह के शिकार हो गये है। समाज के सभी आस्था के केन्द्रों को ध्वंस्त करने के कुत्सित प्रयास वे इस दृष्टिकोण से कर रहे है, ताकि इससे लाल क्रान्ति का महल खड़ा किया जा सके। ऐसे करने से गली-कूचों में मार्क्स, लेनिन, मैकाले की भक्ति प्रारम्भ हो जाएगी।

श्री अकाल तख्त साहिब जी 'सिखी' आस्था का सबसे बड़ा केन्द्र हैं। वह सिख आचार-विचार की सबसे बड़ी आस्था है। आज इस महान संस्था के सामने ही डॉ. मनमोहन सिंह की सरकार द्वारा महान गुरुओं के इतिहास को बिगाड़ने का कुत्सित प्रयास हो रहा है। दूषित इतिहास को पाठ्य पुस्तकों द्वारा छात्रों तक पहुंचाया जा रहा है। कल ऐसा न हो, सिख युवा कहने लगे कि गुरुद्वारा साहिब का इतिहास मिथ्या है और एन.सी.ई.आर.टी. इत्यादि सरकारी इतिहास सत्य। इसकी जिम्मेदारी माननीय प्रधानमंत्री पर भी है। सत्ता की मृगतृष्णा में गुरु इतिहास के बिरसे को डॉ. मनमोहन सिंह खो न बैठें।

मनोविज्ञान मे एक उक्ति है-" We perceive the things as we are" अर्थात् जन साधारण की भाषा में कहें तो सावन के अंधो को हरा-हरा ही दिखाई पड़ता है। रूसी एलैक्जेंडर सोकुटोव द्वारा निर्मित फिल्म "तारस", जिसमें लेनिन के अन्तिम दिनों का चित्रण है, को मार्क्सवादी सरकार ने बंगाल में इसलिए रूकवा दिया।

क्योंकि लेनिन और स्टालिन की जिस छवि को कम्यूनिस्ट पूजते हैं, वह छवि ध्वस्त हो जायेगी। वामपंथी सरकार ने पश्चिमी बंगाल में सेकेण्डरी बोर्ड की पुस्तकों के उन सभी अशों को अशुद्ध माना, जिनमें मुसलमान लुटेरों या शासकों की छवि को बटा लगता था।

माध्यमिक कक्षाओं में इतिहास पुस्तकों के लेखन की परम्परा 1971 से प्रारम्भ हुई और उस पर मार्क्सवादियों ने एकाधिकार योग्यता के बल पर नहीं, बल्कि सत्ता के बल पर प्राप्त किया। उस समय इन्दिरा गांधी और कम्यूनिस्टों में समझौता था और मार्क्सवादी विचारक प्रो. नरूल हसन केन्द्र में शिक्षा राज्य मंत्री बने थे और उन्हीं के बल पर मार्क्सवादी कार्डधारियों ने N.C.E.R.T., U.G.C., I.C.H.R. आदि शीर्ष सभी शीर्ष शैक्षिक संस्थाओं पर कब्जा जमा लिया।

चीन के कम्यूनिस्ट शासक माओ-से-तुंग की प्रसिद्ध उक्ति है-''राजसत्ता बन्दूक के बैरेल से प्राप्त होती है।'' इस घटिया रक्त रंजित राजनैतिक दर्शन को गुरु साहिबान की मीरी-पीरी के सिद्धान्त से प्रत्यक्ष खतरा था। सिखों के संगठित रूप से वे परेशान भी थे। सिख मन: स्थिति कम्यूनिस्टों व उनके सहोदर नेहरूवादियों से मेल नहीं खाती।

मौलाना अब्दुल कलाम आजाद जी की पुस्तक 'इण्डिया विंस फ्रीडम' को पढ़ने से इस विश्वास को बल मिलता है कि सिख इतिहास पर कुठाराघात कोई व्यक्तिगत घटना नहीं है अपितु यह एक वृहद स्वरूप का संगठित षडयंत्र है। भारत विभाजन की प्रक्रिया में सिखों की भूमिका नगण्य थी। किसी सिख नेता ने विभाजन के अहदनामों पर हस्ताक्षर नहीं किए थे। पूरा सिख समाज एक मन से अखण्ड भारत का पक्षधर रहा है। अत: जिन्ना के डायरेक्ट एक्शन के विरोध में सिख समाज का आना उसकी धार्मिक एवं सांस्कृतिक मान्यताओं का प्रगटीकरण है। अकाली सिख नेता मास्टर तारा सिंह जी ने अखण्ड भारत के पक्ष में खुले आम अपना मत रखा। यही नहीं उन्होंने लाहौर में एसेम्बली के ऊपर लगे मुस्लिम लीग के झण्डे को स्वयं निकाला और फाड़ डाला। जेहादियों का विरोध करना और सामाजिक धरातल पर संघर्ष करना सिख मानस का अभिन्न अंग है। लेकिन मौलाना आजाद की पुस्तक में सिख समाज को काले रंग से पोता गया। यही नहीं सिख व्यक्तित्व को आतंकवादी सा रूप दिया गया। यही नहीं विभाजन के दंगों के लिए सिखों को ही दोषी ठहराया गया। सिख समाज के लिए भद्दी भाषा का प्रयोग किया गया। गलत तथ्यों के आधार पर सिख समाज को बदनाम करने का प्रयास हुआ और मुस्लिम लीगियों को पाक साफ दामन का बताने का असफल यत्न किया गया। इसके बाद उक्त पुस्तक को कई दशक तक समाज के सामने से छुपाकर रखा गया।

प. जवाहर लाल नेहरू जी ने 19 अगस्त 1947 में नई दिल्ली आकाशवाणी से यह भाषण दिया-

आपको यह स्मरण रखना चाहिए कि 15 अगस्त तक सारे पंजाब में एक दूसरा ही शासन था। यह प्रांत गवर्नमेंट आफ इण्डिया एक्ट की धारा 93 के अन्तर्गत शासित था। 15 अगस्त को शासन बदला। इस प्रकार नई प्रान्तीय सरकारें अभी केवल चार दिन की है। ....इस बीच में आशा करता हूं कि लोग बेसिरपैर की अफवाओं पर विश्वास न करेंगे, जोकि सहज में फैलकर लोगों के मन पर असर डालती है। वास्तविकता काफी बुरी है, लेकिन अफवाहें उसे और बुरा बना देती है। .... हम मरों को जिला नहीं सकते, लेकिन जो लोग जिन्दा है उन्हें निश्चय ही सरकार से अब सहायता मिलनी चाहिए, और बाद में सरकार को.....'' (जवाहर लाल नेहरु के भाषण-भाग एक -प्रकाशन विभाग सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय पृष्ठ 8.11) इस बेतूके भाषण को अर्थ देने के लिए एक कुटिल बुद्धि के विद्वान का हाजिर होना राजनैतिक परिपेक्ष में आवश्यक था। एक गले सड़े राजनैतिक प्रोडक्ट को एक अच्छे आकर्षक लेबल से ढ़कने की राजनैतिक आवश्यकता नेहरूवादियों को थी। इस दुष्चक्र में दिग्भ्रमित करने वाले विद्वान इतिहासकारों की आवश्यकता हुई। जिन्होंने हमारी आस्थाओं पर कुठाराघात किया।

1975 के आपातकालीन दौर में तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी और सी.पी.आई.एम. नेतृत्व को सिख जन समुदाय के संगठित विरोध ने हिलाकर रख दिया था। ऐसी परिस्थितियों में गुरु साहिबान के बलिदान और गुरु इतिहास पर काला रंग पोतने का कुत्सित व किल प्रयास नेहरूवादियों व वामपंथियों ने किया। जो इतिहास लेखन में परिलक्षित हुआ। राम भारत के जनमानस के मन में विराजते हें। यही कारण है कि पाठ्य पुस्तकों में उन्हें काल्पनिक कहने के बावजूद, वे भारतवासियों के पूर्वज एवम् राष्ट्रनायक है। इसी प्रकार गुरु साहिबान सिखों के ही नहीं, अपितु प्रत्येक भारतीय के मानस में सम्मानित स्थान रखते है। गुरबाणी सुनी, कही और गाई जाती है-अगाध श्रद्धा से। अत: नेहरूवादी और वामपंथी इतिहासकार अपने प्रयासों में विफल रहेंगे, यह तय है।●